

## माँ

आज इस बात को करीब बीस साल बीत चुके हैं। दोनों बेटियाँ जवान हो गयीं। बड़ी की तो आज शादी भी है। कैसे जाऊँ, क्या बताऊँ, किससे कहूँ? जिंदगी एक जंजाल बन गई। भाई भाभी भी फूटी आँख अब नहीं देखते, सब बोझ समझते हैं। पहले वही भाई की मैं लाड़ली बहन थी, अब भाभी लाड़ली बन गई। मैं किनारे पर फेंकी गई मछली के समान बन गई जिसे जल नसीब नहीं, बस तड़पना। अब पति व बेटियाँ दोनों याद आते हैं, क्यों घर छोड़ा? क्यों माँ की बातों में आ गई? क्यों अपने सास-ससुर की बातें नहीं मानी? पति के मान को भी नहीं रखा।

करीब 21 साल पहले मैं शादी करके धामनोद आयी थी। पति शहर में पेट्रोल पंप पर मैनेजर थे, रहना शहर में था इसलिए गाँव से कुछ महीनों बाद मैं शहर चली आई। दो कमरों का छोटा सा मकान, छोटा सा किचन। मैंने अपनी गृहस्थी जमा ली और सुख से रहने लगी। परिवार में बढ़ोतरी हुई, बड़ी बेटि जीवन की बगिया में खुशबू बन कर आयी। पारिवारिक जीवन में हुई उतार चढ़ाव चलते ही रहते हैं। दूसरी बेटि के समय सास-ससुर शहर आ गये। वह बूढ़े सास ससुर अपनी स्नेह की छाया में मुझे रखते और पोतियों पर लाड़-दुलार न्यौछावर करते। वह छोटा घर उनके आने के बाद भी छोटा नहीं लगा दिल सबके बड़े थे, पर यह सुख के दिन अधिक नहीं रह पाये।

एक दिन मेरी माँ घर आयी और बेटि का घर तो उन्हें माचिस की डिब्बियों से भी छोटा लगा, जिसमें इतने सारे लोग पैर फैलाने की जगह नहीं और फिर उस स्वर्ग से घर को नर्क बनते देर नहीं लगी। सास-ससुर ने बहुत समझाया, बेटि अपना घर छोड़कर नहीं जाते, हमारा क्या है, हमने तो अपना जीवन जी लिया। हम वापस गाँव चले जायेंगे तुम अपनी गृहस्थी अपने हाथों मत उजाड़ो, पर मेरी समझ न जाने कहाँ गई थी। मैं अपनी दोनों बेटियों को ले माँ के घर चली आई। पर वहाँ भी मुझे लगा मैं बच्चे क्यों पालूँ? क्या सिर्फ मेरे है? पति क्यों नहीं पालेगा उसकी भी तो जिम्मेदारी है आदि कितनी ही बातें दिमाग में चलती रही। बच्चे भी रात दिन घर चलने की रट लगाने लगे। दादा-दादी, पापा से दूर रहकर वह खुश नहीं थे।

एक दिन बच्चों के पापा हमें लेने आये पर मैं अभिमानी बन बैठी रही और कह दिया अपने बच्चे लेते जाओ। पापा के आते ही बच्चे खुश, माँ को छोड़ पिता के चारों ओर घूमते रहे, उनकी ही गोद में बैठकर खाना खाया, प्यार दुलार सब कुछ और उससे बड़ी चीज अपने घर जाने की खुशी। मैंने बच्चों को रोकना चाहा तो वे न रुके। तीन साल की छोटी बेटिया भी अपनी माँ को अकेली छोड़ चली गई मैं अभिमानी बनी रही। धीरे-धीरे ये मान पिघलने लगा, जब तक अपनी गलती का एहसास हुआ बहुत देर हो चुकी थी। मुझे महसूस हुआ कि अब घर में मेरी और माँ की किसी को जरूरत नहीं। अब माँ को भी क्या दोष दूँ, जिसने मेरा घर छुड़वाया अब उसी का अपने घर पर ही कोई अधिकार नहीं। जिंदगी बोझ हो गई, मन बहुत हो रहा है जाकर क्षमा माँग लूँ। शायद परिवार के लोग मुझे माफ कर दें। मैं हिम्मत करके मैं वहाँ गई। सास ससुर ने तो मेरी गलती माफ कर दी, पति ने भी मुझे अपना लिया पर मेरे बच्चों ने मुझे माँ मानने से इंकार कर दिया। उनका कहना था - तुम हमारी माँ नहीं हो सकती।

- डॉ. मधु जैन, सहायक प्राध्यापक हिन्दी, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

## संस्कार

एक चोर ने देखा कि नट एक रस्सी पर चलता है, नाचता है, नीचे छलांग लगाता है। यह देखकर चोर ने नट से कहा यहाँ इतनी मेहनत करते हो तब कही 5-10 रूपया मिलता है। मेरे साथ चलो वहाँ इतनी मेहनत में हजारों कमा लगे। तब नट चोर के साथ चला गया। एक रात को दोनों एक मकान की छत पर चढ़ गये। चोर ने नट से कहा अब यहाँ से मकान के भीतर छलांग मारो जैसे रस्सी पर से कूद जाते हो। नट ने कहा-पहले ढोल बजाओ तभी मैं छलांग मारूँगा। चोर ने सिर ठोक लिया। इसी प्रकार जीव में छल-कपट विषय भोगों के कषाय तथा पापों के संस्कार अनादि से पड़े हुए हैं जो छूटना बड़ा ही मुश्किल होता है। इसलिये उसको सत्संगति की आवश्यकता होती है। जो हमें धर्म साधना से ही प्राप्त हो पाती है।

- श्रीमती किरण फणीश, न्यू देवास रोड़, इन्दौर

## हीन भावना को दूर कर व्यक्तित्व निखारें।

हीन भावना (Inferiority Complex) एक मानसिक बीमारी है, और यह हमारे समाज में, अपने आस-पास आसानी से देखने को मिलती है। करीब 100 में से 80 लोग इस रोग से ग्रसित हैं। जिस भी व्यक्ति में आत्मविश्वास की थोड़ी सी कमी होती है वह इसका शिकार हो जाता है, और यही हीन भावना व्यक्ति के दुःख का कारण बन जाती है।

हीन भावना वर्तमान का सुख नहीं भोगने देती, क्योंकि उसमें भविष्य दिखाई नहीं देता और भूतकाल तो बीत चुका है। इस प्रकार इससे ग्रसित व्यक्ति अपने तीनों कालों को नष्ट कर देता है।

### कारण

1. सबसे पहले जन्म से या बाद में शारीरिक या मानसिक रूप से असमर्थ व्यक्ति अगर कुछ करना चाहता है और वो नहीं कर पा रहा है तो वह इस बीमारी से ग्रसित हो जाता है। कई बार बीमार पड़ जाता है।
2. कई बार मनुष्य की आर्थिक स्थिति बदलती है, कभी कम, तो कभी ज्यादा। इससे भी वो हीन भावना से ग्रसित हो जाता है।
3. हर व्यक्ति में कुछ कर दिखाने की अद्भुत शक्ति छुपी है। कुछ लोग एक काम अच्छा कर पाते हैं तो कुछ दूसरा, लेकिन आजकल दौड़ लगी है सभी माता-पिता अपने बच्चों के पीछे डंडा लेकर पड़े हैं कि 'पढ़ो-पढ़ो' और जब वो ये नहीं कर पाते तो इसके शिकार हो जाते हैं।
4. युवा वर्ग अपने साथियों की पढ़ाई, पैसा, उनका रहन-सहन से भी इसके शिकार हो रहे हैं, जो कि उन्हें अनैतिक कार्य जैसे - नशा, आत्महत्या, झूठ बोलना, चोरी करना की ओर अग्रसर कर रहा है।

### कविता

### “बुरा लगता है”

बुरा लगता है जब सुनते हैं, बेटा बेटि में अन्तर होता है।

बुरा लगता है जब बेटि का, कोख में कत्ल होता है ॥

क्यों कुल दीपक बनकर बैठे हैं बेटा,

जब कि बेटि भी ज्योति होती है।

21वीं सदी में भी बेटि क्या, माँ बाप पर बोझ होती है ॥

वो सब कर सकती बेटि, जो बेटा करता है।

माँ-बाप को बेघर कर देता, बेटा जब बड़ा होता है।

लेकिन न बेटि कर सकती ऐसा, उसमें तो ममता होती है।

जो सह जाती बेटि, वो बेटा सह न पाएगा,

जो बढ़ता रहा ये पाप तो ये संसार,

एक दिन नारी मुक्त हो जाएगी।

न रहेगी ममता, प्रेम, समर्पण ये संसार

जन्नत से जहन्नुम हो जाएगा।

कहो फिर कैसे बढ़ेगी वंश बेल, कैसे बेटा आ पाएगा।

कु. ऋतु जैन,

बरेठ रोड़ गंजबासौदा (म.प्र.)

5. बहुत से युवा अपने लुक्स से भी परेशान हैं कोई छोटा, मोटा, लम्बा, दुबला होने पर इसके शिकार हो जाते हैं।

### निवारण

1. इसके निवारण के लिए जरूरी है व्यक्ति अपनी आत्मशक्ति को पहचाने। उसे मजबूत करे और हिम्मत से अपने कार्य को पूर्ण करे।
2. अगर अपने बच्चों को इस भावना से बचाना है तो ये भावना पैदा ही न होने दें, उन्हें समझाए जो है, जैसा है और जितना है वह अपने लिए अच्छा है और हम अपनी मेहनत से इसे और अच्छा कर लेंगे।
3. माँ बाप को चाहिए कि अपने बच्चों को दूसरो के सामने नीचा न दिखायें। अगर बच्चा गलत है तो कहीं न कहीं आप इसके जिम्मेदार हैं।
4. बच्चों में सकारात्मक सोच को प्रोत्साहन देना सबसे ज्यादा जरूरी है।
5. पढ़ाई के अलावा बच्चों में कई प्रतिभाएं होती हैं, उन्हें पहचानकर प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. बच्चों को संतोष और शांति की भावना सीखानी चाहिए जो कि धर्म से आती है।

हीन भावना से ग्रसित लोग बहुत से असामाजिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं - नशा, झूठ, चोरी और आत्महत्या जैसे संगीन कार्य करने लगते हैं। उन्हें समझना या समझाना चाहिये कि भविष्य को सुधारना है तो वर्तमान सुधारना होगा। मनुष्य को हर हाल में खुश, सुखी रहने के लिए आत्मविश्वास के साथ संतोष धारण करना चाहिए।

‘संतोषी धन सदा सुखी’

आलेख- अंजू जैन, मंगलवारा, भोपाल

## ईर्ष्या-त्याग

1. ईर्ष्या के विचारों को अपने मन में न आने दो, क्योंकि ईर्ष्या से रहित होना धर्माचरण का एक अंग है।

2. सब प्रकार की ईर्ष्या से रहित स्वभाव के समान दूसरा और कोई बड़ा वरदान नहीं है।

3. जो मनुष्य धन या धर्म की परवाह नहीं करता, वही अपने पड़ोसी की समृद्धि पर डाह करता है।

4. समझदार लोग ईर्ष्या बुद्धि से दूसरों को हानि नहीं पहुंचाते, क्योंकि उसका जो खोटा परिणाम होता है, उसे वे जानते हैं।

5. ईर्ष्यालु के लिए ईर्ष्या ही पूरी बला है। उसके बैरी उसे चाहे क्षमा भी कर दे तो भी वह उसका सर्वनाश ही करेगी।

6. जो मनुष्य दूसरों को देते हुए नहीं देख सकता, उसका कुटुम्ब रोटी और कपड़े तक के लिये मारा मारा फिरेगा और नष्ट हो जावेगा।

7. ईर्ष्या करने वाले के पास लक्ष्मी नहीं रह सकती, वह उसको अपनी बड़ी बहिन दरिद्रता की देखरेख में छोड़कर चली जायेगी।

8. दुष्टाईर्ष्या दरिद्रता रुपी दावनी को बुलाती है और मनुष्य को नरक के द्वार तक ले जाती है।

9. ईर्ष्या करने वालों की समृद्धि और उदारचित्त पुरुषों की कंगाली ये दोनों ही एक समान आश्चर्यजनक हैं।

10. न तो ईर्ष्या से कभी कोई फूला-फला है और न उदार हृदय कभी वैभव से हीन रहा है।

संकलन - डॉ. अरुण बिलुआ

बड़ापुरा, ललितपुर

## पाठको की कलम से ...

गोलालरीय दर्शन ने समाज के लोगो को एक मंच उपलब्ध कराया है जिनके लिये साधुवाद ! प्रकाशित बायोडाटा के माध्यम से कितने विवाह संपन्न हुए हैं इसकी जानकारी भी प्रकाशित करें।

- निलेश जैन, अहमदाबाद

गोलालरीय समाज की प्रतिभाओं के लिए यह पत्र सराहनीय कार्य कर रहा है। 21वीं सदी में जहां जातिवाद फैल रहा है वहां अपने समाज को सुदृढ़ व संगठित करना बहुत ही बढ़िया प्रयास है।

- अजित जैन, ग्वालियर

गोलालरीय दर्शन एक अच्छा प्रयास है इसके माध्यम से समाज की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। परन्तु प्रकाशन की प्रति समय पर नियत स्थान पर नहीं पहुंचती है। कृपया इसके लिए कुछ कारगर प्रयास करें।

- डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जैन, नागपुर

जिस प्रकार शरीर का कोई अंग ठीक से कार्य नहीं करता है तो वह व्यक्ति कमजोर माना जाता है, उसी तरह हम सकल दि. जैन समाज में अपना सशक्त योगदान देने के लिए हम अपने समाज को सुदृढ़ व संगठित करने का प्रयास कर रहे हैं। किसी भी अन्य समाज से प्रतिस्पर्धा की भावना हममें नहीं है, हम गोलालरीय समाज को सुदृढ़ कर समग्र समाज का अभिन्न अंग बनाने में प्रयासरत हैं।

- सुधेश कुमार जैन, इन्दौर

गोलालरीय दर्शन पत्रिका प्राप्त हुई। इसका नियमित प्रकाशन समाज के हित में एक अनुकरणीय कदम है इस पत्रिका के माध्यम से समाज के सदस्यों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए यह एक सेतु का कार्य कर रहा है। विवाह योग्य प्रत्याशियों के बायोडाटा का प्रकाशन कर समाज के समस्त परिवारों को एक ही स्थान पर संपूर्ण जानकारी उपलब्ध करा रहा है। आशा है यह प्रयास सतत जारी रहेगा। - महेंद्र जैन, ललितपुर